कक्षा-12

'क्या निराश हुआ जाए ?

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

तैयार व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल

क. लगभग 60 शब्दों में उत्तर दें:-

प्रश्न-1 आजकल चिन्ता का कारण क्या है?

उत्तर- आजकल समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी तस्करी और भ्रष्टाचार की खबरें भरी रहती है। लोग एक दूसरे पर दोष थोपते रहते है जिससे लगता है कि कोई भी ईमानदार नहीं रह गया। हर व्यक्ति शक के दायरे में दिखाई देता है। जो व्यक्ति कोई काम करेगा तो उसके काम में कहीं न कहीं कोई दोष रह जाना स्वाभाविक है। किंतु जब उसके गुणों को भुलाकर सिर्फ दोषों की ही लोग देखने लग जाते हैं तो यह एक दुःखद स्थिति है। यही चिंता का कारण है।

प्रश्न 2 जीवन के महान् मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था क्यों हिलने लगी है?

उत्तर- कोई भी समाज तभी उत्कृष्ट बन सकता है जब वहाँ लोगों की ईमानदारी, परिश्रम, सच्चाई आदि जीवन मूल्यों में आस्था हो। किंतु आजकल ईमानदारी से मेहनत करके अपना जीवन व्यतीत करने वाले बेचारे भोले-भाले मज़दूर पिस रहे हैं,जबकि झूठ और फ़रेब से धन कमाने वाले फल-फूल रहे हैं। जो ईमानदार है उसे मूर्ख समझा जाता है।सच्चाई केवल डरपोक और बेबस लोगों के हिस्से में रह गयी है। इस प्रकार समाज में प्रतिकूल स्थितियों में लोगों की जीवन के महन् मूल्यों के प्रति आस्था हिलने लगी है।

प्रश्न-3 वे कौन से विकार हैं, जो मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं ?

उत्तर- काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि ऐसे विकार हैं, जो कि मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं किंतु इन्हें प्रधान शक्ति मानकर अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत ही घटिया आचरण है। भारत में कभी भी इन्हें उचित नहीं माना गया। इन्हें सदा संयम के साथ बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है, किंतु कुछ घटिया लोग जब स्वार्थी हो जाते हैं तो ये विकार और भी बढ़ते जाते हैं जिनके परिणामस्वरूप लोग अपने लक्ष्य को भी भूल जाते

हैं। अत: इन विकारों पर संयम रखना ज़रूरी है।

प्रश्न-4 धर्म और कानून में क्या अंतर है?

उत्तर- भारत में सदा कानून को धर्म के रूप में देखा जाता रहा है। राजा को न्याय करते समय धर्माधिकारी माना जाता था। किन्तु आज स्थिति बदल चुकी है। आज कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता किन्तु कानून में कहीं न कहीं ऐसी कमी है कि उसे धोखा दिया जा सकता है। इसी कारण जो लोग धर्मभीरू हैं, वे कानून की कमियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

प्रश्न-5 किसी ऐसी घटना का वर्णन करो जिससे लोक चित्त में अच्छाई की भावना जागृत हो।

उत्तर- कुछ दिन पहले की बात है कि मैं एक फोटोस्टेट की दुकान पर अपने कुछ दस्तावेज़ फोटोस्टेट करवाने के लिए गया। मैं जल्दबाज़ी में अपने असली दस्तावेजों में से एक वहीं भूल आया। वह दस्तावेज़ मेरे लिए बहुत ज़रूरी था। मैं अभी दुकानदार के पास जाने की सोच ही रहा था कि वह मेरा दस्तावेज़ लेकर मेरे घर आ गया। मेरे पूछने पर उसने बताया कि उसी दस्तावेज़ से उसने मेरे घर का पता मालूम किया था। मैंने उसका धन्यवाद किया। किन्तु उसने मुझे कहा कि यह तो मेरा फ़र्ज़ था। उस दिन मुझे यकीन हो गया कि आज भी लोगों के मन में दूसरों की सुख-सुविधा का ख्याल है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों में लिखो

प्रश्न.1 'क्या निराश हुआ जाए? ' निबंध का सार लिखो।

उत्तर :-यह निबंध मानवीय मूल्यों पर आधारित है। लेखक के अनुसार समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचारों को पढ़कर उसका मन दुःखी हो जाता है। ऐसे लगता है कि देश में कोई ईमानदार रहा ही नहीं। हरेक आदमी को शक की नज़र से देखा जाता है। क्या हमारे मनीषियों ने ऐसे भारत का सपना देखा था। नहीं,बिल्कुल नहीं। लेखक को विश्वास है कि हमारे महान मनीषियों का भारत है और रहेगा। आजकल ईमानदारी से मेहनत करने वाले भोले-भाले मज़दूर पिस रहे हैं, जबकि झूठे और फरेबी लोग फल-फूल रहे हैं

ऐसे में आम आदमी की जीवन मूल्यों के प्रति आस्था हिलने लगती है कुछ स्वार्थी लोगों ने लोभ,मोह, काम, क्रोध आदि विकारों को अपनी ज़िन्दगी में प्रधानता दे रखी है, जिस कारण वे अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं अन्यथा भारत ने कभी भी इन्हें जीवन में प्रमुख नहीं माना।

लेखक को पूरा विश्वास है कि आज भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई तथा अध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। लेखक ने निजी उदाहरणों से इस बात को स्पष्ट किया है। एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से लेखक ने दस रुपये की जगह सौ रुपये दे दिये और टिकट लेकर चले गये। किंतु टिकट बाबू ने उन्हें जैसे-तैसे ढूँढ़कर उहें नब्बे रुपये वापिस कर दिये। इसी तरह एक दूसरी घटना लेखक के साथ घटी। एक बार लेखक सपरिवार बस में सफर कर रहा था। अचानक एक सुनसान जगह पर बस खराब हो गई। बस कंडक्टर साइकिल लेकर न मालूम किधर चला गया। सभी ने सोचा वह जरूर डाकुओं को लेने गया होगा। यात्रियों ने बस के ड्राइवर को पकड़ लिया और उसे मारने पीटने की योजना बनाने लगे। किंतु थोड़ी देर बाद बस कंडक्टर नयी बस लेकर आ गया। वह लेखक के बच्चों के लिए पानी व दूध भी लेकर आया। सभी यात्री शर्मिंदा थे। उन्होंने ड्राइवर से माफी मांगी । लेखक कहता है कि कैसे कहूं कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी खत्म हो गई है। लेखक कहता है किहे मेरे मन ! निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्न 2. इस निबंध में द्विवेदी जी ने कुछ घटनाएं दी हैं जो सच्चाई और ईमानदारी को उजागर करती हैं उनमें से किसी एक घटना का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर- इस निबंध मे द्विवेदी जी ने अपने जीवन में घटित दो ऐसी घटनाओं का ज़िक्र किया है जो सच्चाई और ईमानदारी को उजागर करती हैं। उनमें से निम्नलिखित घटना ने मेरे मन पर भी गहरी छाप छोड़ी है।

एक बार द्विवेदी जी ने रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते समय गलती से दस के बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया और जल्दबाज़ी में गाड़ी में आकर बैठ गए।

थोड़ी देर में टिकट बाबू उन्हें ढूँढ़ता हुआ उनके डिब्बे में आया और उनके हाथ में बड़ी विनम्रता के साथ नब्बे रुपए रख दिए। उसने कहा कि आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक संतोष की गरिमा थी। द्विवेदी जी सचमुच हैरान थे। उन्होंने मन में सोचा कि कैसे कहूं कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है। लेखक के मन में आया कि उनके जीवन में अनेक अवांछित घटनाएं भी हुई है किंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

प्रश्न-3 मानवीय मूल्य से संबंधित यदि कोई ऐसी ही घटना आपके साथ घटित हुई हो, तो उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर- पिछले महीने की बात है कि एक दिन आधी रात को मेरे पिताजी को दिल का दौरा पड़ गया। मेरी मम्मी और बहन ज़ोर-ज़ोर से रोने लग पड़ीं। उनके रोने की आवाज़ को सुनकर हमारे पड़ोसी शर्मा जी आ गये। वे फटाफट अपनी कार ले आये और पिता जी को अस्पताल ले गये। मैं और मेरी मम्मी भी उनके साथ ही थे। एमरजेंसी पहुँचते ही डॉक्टर ने इलाज शुरू कर दिया। डॉक्टर जो भी दवाई लाने को कहते उसे शर्मा जी फटाफट ले आते। उन्होंने मुझे कहा कि तुम अपने पिता जी के पास रहो। डॉक्टरों ने कुछ टेस्ट और एक्स-रे करवाने के लिए कहा। मुझे तो यह भी नहीं मालूम था कि ये टेस्ट अस्पताल में कहाँ होते हैं। किंतु शर्मा जी को सब मालूम था। उन्होंने ही पिता जी के टेस्ट वगैरह करवाये। चार-पाँच घंटों के बाद डॉक्टरों ने कहा कि अब पिता जी की तबीयत ठीक है किंतु अस्पताल से छुटटी सुबह होगी। रात भर शर्मा जी भी वहीं रहे। सुबह होते ही पिता जी को छुट्टी हो गयी। सचमुच अगर शर्मा जी हमारे साथ न होते तो हम संभवत: पिता जी को न बचा पाते।जब हमने उनका धन्यवाद किया तो उन्होंने कहा कि मैंने तो अपने पड़ोसी होने का ही फ़र्ज़ निभाया है।

ग) सप्रसंग व्याख्या करें:

प्रश्न 1 जीवन के महान् मूल्यों के बारे में आस्था ही हिलने लगी है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' ? में से ली गई हैं । यहाँ लेखक ने जीवन मूल्यों के प्रति लोगों की डगमगाती आस्था के बारे में बताया है।

व्याख्या : लेखक कहता है कि आज देश में कुछ इस प्रकार का माहौल बन गया है कि जो व्यक्ति अपना काम ईमानदारी से करता है उसे लोग मूर्ख समझते हैं। मेहनतकश भोले-भाले मज़दूर पिस रहे हैं और झूठे और फरेबी लोग फल-फूल रहे हैं। इस प्रकार बुरे लोगों को पनपते हुए देखकर लोगों की जीवन के महान मूल्यों जैसे सच्चाई,ईमानदारी, परोपकार, दया आदि के प्रति आस्था डगमगाने लगी है जो कि सचमुच चिंता का विषय है।

भावार्थ : भाव यह है कि जब सच्चे और मेहनती लोग अपने आस-पास झूठे और धोखाधड़ी करने वालों को फलता-फूलता देखते हैं तो उनका जीवन मूल्यों पर विश्वास कमज़ोर पड़ने लगता है।

विशेष : 1. भाषा सरल एवं सहज है

2. लेखक ने विचारात्मक शैली का प्रयोग किया है।

3. लेखक जीवन के महान मूल्यों के प्रति चिंतित है।

प्रश्न 2. धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्ति डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'क्या निराश हुआ जाए? ' में से ली गयी है। यहाँ लेखक कहना चाहता है कि धर्मभीरू लोग कानून को धोखा देते हैं।

व्यख्या: लेखक कहता है कि पहले लोग कानून को धर्म के रूप में देखते थे किंतु अब धर्म और कानून दो अलग-अलग चीज़ें बन गयी हैं। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता किंतु जो धर्म भीरू लोग हैं, वे कानून की कमियों के कारण कदम-कदम पर कानून तोड़ते दिखायी देते हैं।

भावार्थ : भाव यह है कि लोग धार्मिक बातों का जैसे तैसे पूरा सम्मान करते हैं किंतु कानून की धज्जियां उड़ाते हैं अर्थात् धर्म से डरते हैं पर कानून से नहीं।

विशेष : 1. लेखक ने धर्म को कानून की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है।
2. विचारात्मक शैली का प्रयोग है।
3. भाषा में प्रवाह है। भाषा सरल, सहज एवं स्पष्ट है।

प्रश्न 3 अच्छाई को उजागर करना चाहिए, बुराई में रस नहीं लेना चाहिए।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' ? में से ली गई हैं । यहाँ लेखक ने अच्छाई व बुराई की तुलना करते हुए अच्छी बातों को उद्घाटित करने पर विशेष बल दिया है ।

व्याख्या : लेखक कहता है कि दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करते समय उसमें रस लेना बुरी बात है। लेखक का मानना है कि जितना हम बुराई में रस लेते हैं, यदि हम उतना ही रस अच्छाई को उजागर करने में लें तो समाज की बहुत भलाई हो सकती है। अंततः समाज का भला तो अच्छी बातों से होगा न कि बुरी बातों से।

भावार्थ : हमें अच्छाई को उजागर करने का हमेशा प्रयास करना चाहिए।

विशेष : 1. लेखक ने सरल, सहज व स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया है।
2. लेखक का गंभीर चिंतन दृष्टिगोचर होता है।

प्रश्न 4 सामाजिक कायदे कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह अलोड़ित भी होती है,पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' ? में से ली गई हैं।
इसमें लेखक चाहता है कि जब सामाजिक नियमों का परीक्षित आदर्शो से सामना होता है तो इनके संघर्ष से हुए परिवर्तन से निराश नहीं होना चाहिए।

व्याख्या : लेखक कहता है कि परिस्थितियों के अनुसार सामाजिक नियम और कानून बनाए जाते हैं। इनको समय-समय पर बदला भी जाता है। किंतु जब ये नियम और कानून उन आदर्शों से टकराते हैं जिनकी युगों से पहले ही परीक्षा

ली जा चुकी है तो इनमें आपस में एक संघर्ष सा चलता रहता है। ऐसा पहले भी होता रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा। किंतु लेखक कहता है कि हमें ऐसी स्थिति से घबराना नहीं चाहिए।

भावार्थ : भाव यह है कि सामाजिक नियमों और परीक्षित आदर्शों में संघर्ष से बाहरी रूप से ही हलचल होती है ।आंतरिक रूप से इन आदर्शों पर प्रहार नहीं होता। अत: निराश नहीं होना चाहिए।

विशेष : 1. लेखक का यहाँ गंभीर चिंतन दृष्टिगोचर होता है।

2. भाषा में प्रवाह है। भाषा सरल, सहज एवं स्पष्ट है।

3. फारसी और संस्कृतनिष्ठ भाषा में सुदर समन्वय है।

तैयार व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

स्टेट रिसोर्स पर्सन

(हिंदी और पंजाबी)